अखिल असम सत्र महासभा के 'सेतुबंधन' कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 4 जुलाई 2024, गुरुवार	समय : 11.00 AM	स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र

- असम सरकार के माननीय राज्य मंत्री
  श्री विमल बोरा जी,
- अखिल असम सत्र महासभा के अध्यक्ष
  श्री सुनिल कुमार गोस्वामी जी,
- उत्तर कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार
  श्री जनार्दन देव गोस्वामी जी,
- दैनिक असम के संपादक **श्री हितेश डेका जी,**
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- महासभा के सम्मानित सदस्यगण
- मीडिया से हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों

नमस्कार!

1. असम विविध संस्कृतियों का मिलन स्थल है। असम की प्राचीन और विविध संस्कृतियों के प्रदर्शन के उद्देश्य से **'सेतुबंधन'** कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए मैं **अखिल असम सत्र महासभा** को हार्दिक धन्यवाद देता हूं तथा कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

प्राचीन काल से ही असम विभिन्न जातियों और जनजातियों का निवास स्थान रहा है। असमिया संस्कृति इन सभी जातियों की एक समृद्ध और आकर्षक ताना-बाना है। **'सेतुबंधन'** कार्यक्रम के माध्यम से **अखिल असम सत्र महासभा** ने इन सभी जातीय और जनजातियों की कला और संस्कृति को एक मंच पर लाने का सराहनीय प्रयास किया है। मैं इस प्रयास के लिए संगठन को धन्यवाद देता हूं।

'सेतुबंधन' कार्यक्रम से स्थानीय कलाकारों को अपनी कला-संस्कृति और हूनर प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसके अलावा उन्हें अपनी आजीविका कमाने का मौका मिला है। ऐसे कार्यक्रमों से कलाकारों में विश्वास पैदा होता है।

मुझे विश्वास है कि आज के इस कार्यक्रम भविष्य के प्रभावी सिद्ध होगा और युवा पीढ़ी अपनी समृद्ध कला-संस्कृति के विकास और संरक्षण के लिए प्रेरित होंगे।

2. मित्रों,

यह प्रसन्नता की बात है कि असम सत्र महासभा अपनी स्थापना के समय से ही हमारी संस्कृति को समृद्ध करने का काम कर रहा है। यह सत्र महासभा के योगदान के कारण ही असम के विभिन्न जातीय समूहों में इतना सामंजस्यपूर्ण सांस्कृतिक मेलजोल है। हालाँकि, हम सभी के लिए प्रमुख शक्ति श्रीमंत शंकरदेव जी हैं।

इस शुभ अवसर पर, मैं गुरुजनों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने जाति, छुआछूत और समानता जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने का काम किया। हालाँकि इनमें से कुछ बुराइयाँ आज भी हमारे समाज में छिटपुट रूप से मौजूद हैं। यह सुखद है कि अखिल असम सत्र महासभा जैसी संस्थाएं समाज की ऐसी बुराइयों को ख़त्म करने के लिए काम कर रही हैं।

3. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने देश भर में यात्रा की और एकता और समानता का संदेश फैलाया। अब श्रीमंत शंकरदेव की शिक्षा के अनुरूप, अखिल असम सत्र महासभा समावेशी विकास लाने के लिए सामूहिक प्रयासों के मंत्र का प्रसार कर रही है।

हमें एक मजबूत और विकसित भारत के अपने सपने को पूरा करने के लिए सामूहिक रूप से आगे बढ़ना होगा, जो श्रीमंत शंकरदेव के आदर्शों और शिक्षाओं पर आधारित होगा।

4. यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन असम के विभिन्न जातीय समूहों की पारंपरिक लोक संस्कृति के उत्थान, प्रदर्शन, प्रसार और संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम कर रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महासभा के इन प्रयासों से वृहद असमिया संस्कृति के विकास के साथ-साथ समाज में एकता, सौहार्द और सद्भाव की डोर को और मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

5. मुझे खुशी है कि महासभा अपने दीर्घकालिक कार्यक्रम के अंतर्गत सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन कर युवाओं को अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक करने का कार्य कर रहा है।

महसभा ने गोलाघाट में एक सांस्कृतिक कॉलेज की स्थापना की है, जो असम की गौरवशाली संस्कृति के विकास और प्रसार के लिए इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके अलावा संगठन एक विश्वविद्यालय की स्थापना की तैयारी भी कर रहा है।

6. देवियो और सज्जनो,

भारत एक ऐसा देश है, जहां अलग-अलग स्थानों पर अलग वेषभूषा, अलग भाषा तथा अलग खान-पान होते हुए भी एक है। यही भारत की विविधता में एकता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक पहाड़ों पर रहने वाले व्यक्ति हो या मैदानी भागों के लोग या आदिवासी, ये सभी भारत की विशिष्ट पहचान है और देश की अनेकता में एकता का परिचय दे रहे हैं।

इसलिए भारत में हुए अनेक आक्रमणों के बावजूद भी भारत सांस्कृतिक रूप से हमेशा एक रहा है। हमारी प्राचीन परम्पराएं तथा समृद्ध विरासत सदैव कायम रही हैं।

आज इसी का परिणाम है कि उत्तर दिशा में चाहे कश्मीर या शिमला जैसे पर्यटन स्थल हो, पूर्व में सदियों पुराना कामाख्या देवी का मन्दिर, पश्चिम के गुजरात में कच्छ का मरूस्थल हो या तेलंगना के प्रसिद्ध रामप्पा देवालय हो या दक्षिण में कन्याकुमारी व रामेश्वरम के प्रसिद्ध तीर्थों को आज भी बड़े श्रद्धाभाव से देखने जाते हैं। इन स्थानों पर केवल हमारे देश के श्रद्धालु ही नहीं जाते हैं, बल्कि विदेशी पर्यटक भी यहां की यात्रा करते हैं।

7. देवियो और सज्जनो,

असम में बोडो, कछारी, कार्बी, मिरी, मिसिंग, राभा आदि जैसी विविध जनजातियाँ हैं। इनमें से प्रत्येक अपनी परंपरा, संस्कृति, पोशाक और जीवन के अनोखे तरीके में अद्वितीय हैं।

असमिया लोगों में से अधिकांश वैष्णव धर्म का पालन करते हैं। असम के सांस्कृतिक ताने-बाने को दो महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ प्रभावित करती हैं। वे हैं **"सत्र"** और **"नामघर"**।

"सत्र" धार्मिक और सांस्कृतिक अभ्यास का स्थल है, और **"नामघर"**, प्रार्थना का घर है।

"सत्र" असमिया संस्कृति के प्रमुख केंद्र हैं। यह मुख्य रूप से असम में वैष्णव धर्म की **'एकशरण'** परंपरा से जुड़ा है। असम के महान संतों, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव ने लोगों की सामाजिक-सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सत्रों की स्थापना की।

भाओना-सभा, सत्रीय नृत्य और संगीत, कला और संस्कृति, नाटकीय प्रदर्शन सत्रों की मुख्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ हैं। सत्रों ने नैतिक चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सत्रीय संगीत, सत्रीय नृत्य, सत्रीय भाओना सभा, उत्सव आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असमिया लोगों को प्रभावित करते हैं।

8. असम के विभिन्न स्थानों में बहुत सारी सत्र संस्थाएँ हैं। कमलाबाड़ी सत्र, दक्षिणपात सत्र, गरमुर सत्र, औनियाटी सत्र, बेंगेना अति सत्र, पाटबाउसी सत्र, बरपेटा सत्र आदि प्रमुख सत्र हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई की अखिल असम सत्र महासभा राज्य के 1200 सत्रों और 4000 नामघरों का संयुक्त संगठन है।

9. सत्रों में सनातन धर्म से संबंधित कई दुर्लभ वस्तुएं संरक्षित हैं। सत्रों में श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्यों श्री माधवदेव, श्री दामोदर देव और श्री हरिदेव द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ वस्तुओं और प्राचीन तकनीक से लिखी गईं सचिपत पुथि (पुस्तकें) भी इन सत्रों में अच्छी तरह से संरक्षित हैं।

10. देवियो एवं सज्जनो,

असम के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और धार्मिक वृतांतों में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव का उच्च एवं महत्वपूर्ण स्थान है। सांस्कृतिक, अध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रों में उनके योगदान से असमिया समाज में साहित्य, कला और संस्कृति का एक नया युग स्थापित हुआ।

श्रीमंत शंकरदेव की शिक्षाएं और उनके द्वारा प्रचारित धार्मिक सिद्धांत **"एक शरण नाम धर्म"** भागवत पुराण पर आधारित थे। असम के महान संत श्रीमंत शंकरदेव ने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए सत्रीय नृत्य कला को एक शक्तिशाली माध्याम बनाया था।

11. सत्रीय भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपराओं में से एक नृत्य शैली है। लेकिन यह केवल एक नृत्य शैली ही नहीं, बल्कि असम की सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संस्कृति है।

आध्यात्मिक उत्साह और शैक्षिक मूल्य के साथ, सत्रीय परंपरा समुदाय के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह परंपरा मुख्यत: मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है, और इस प्रक्रिया में समय-समय पर मधुर और लयबद्ध सुधार भी होते हैं।

12. देवियो और सज्जनो,

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत का संस्कृति मंत्रालय, हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न रूपों का न केवल संरक्षण कर रहा है, बल्कि बढ़ावा भी दे रहा है। इसके साथ ही वैश्विक विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से दुनिया के विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को विकसित किया जा रहा है, जिससे लोक कला और संस्कृति के विभिन्न रूपों के प्रचार-प्रसार कार्य को बढ़ावा मिला है।

हमारी सरकार ने भी राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के पोषण और संरक्षण के अपने मिशन में निरंतर प्रयासरत है। सांस्कृतिक विभाग राज्य की जातीय, स्वदेशी जनजातियों और समुदायों की जीवित संस्कृति को संरक्षित करने का काम कर रहा है।

राज्य सरकार का सांस्कृतिक विभाग वैश्विक स्तर पर लोगों के बीच सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ इस क्षेत्र में रोजगार पैदा करने के लिए लगातार काम कर रहा है। यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अनुकूल वातावरण बनाने पर भी जोर दे रहा है।

13. मुझे खुशी है कि महासभा द्वारा इस कार्यक्रम में सत्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने में योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया जा रहा है। मैं इस अवसर पर सम्मानित होने वाले कलाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

आशा है कि इस कार्यक्रम से असम की विविध संस्कृति को नई दिशा मिलेगी और युवा हस्तशिल्प और कारीगरों को नई पहचान प्राप्त होगी। ऐसे आयोजन हमारे देश की विविधताओं को एकता में प्रदर्शित करने में अहम भूमिका अदा करेंगे और युवा पीढ़ी इससे प्रेरित होंगी।

मुझे विश्वास है कि अखिल असम सत्र महासभा असम की वृहद कला-संस्कृति और राज्य की सांस्कृतिक एकता को जीवंत और बरकरार रखने और में अपना योगदान देती रहेगी।

पुनः आप सभी को इस कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई और महासभा के भविष्य के कार्यों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।